Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed)
Journal home page: www.jmsjournals.in, **ISSN: 2454-8367**
Vol. 11, Issue-I, July 2025

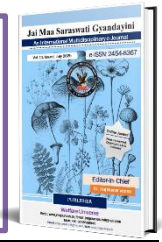

बिंबवादी कवि चंद्रकांत देवताल: एक समीक्षात्मक अध्ययन
(Imagist Poet Chandrakant Devtale: An Analytical Study)

Dr. Banwari Lal[a,*],
[a]*Associate Professor (VSY), Modison Rajkiya Mahavidyalaya Fatehpur Sikar, Pandit Deendayal Upadhyaya Shekhawati University, Sikar, Rajasthan (India).*

KEYWORDS
यथार्थबोध, वर्तमान परिवेश में प्रासांगिकता, विचार बोध, चित्रात्मकता, संगीतात्मकता, लयबद्धता इत्यादि।

ABSTRACT
बिंब का अर्थ वस्तु या दृश्य की मानसिक छवि या चित्र है यह एक ऐसी अनुभूति है जो हमें किसी वस्तु को देखकर, सुनकर, सूंघकर, छूकर, चखकर होती है। साहित्य में बिंब का उपयोग पाठक के मन में एक जीवंत और स्पष्ट चित्र बनाने के लिए किया जाता है। साहित्य धारा में परिस्थिति और काव्य प्रवृत्तियों में प्रवर्तन के साथ–साथ शैली में यथा संभव परिवर्तन और विकास होते रहे हैं। वर्तमान में यदा–कदा बिंब परिमार्जित रूप धारणकर अलंकार रूप में भी प्रस्तुत होते रहे हैं, बल्कि प्राचीन काल में जो स्थान अलंकारों का था, वह स्थान वर्तमान में बिंबो ने ले लिया है। इस काव्य धारा के कवियों ने तत्कालीन परिस्थितियों को प्रस्तुत करने के लिए इस कला का बेखूबी प्रयोग किया है। देवताले जी ने अपने काव्य – संग्रहों में संकलित रचनाओं में इस कला का परिष्कृत रूप अपनाकर अपनी भावना को पाठक या श्रोता तक पहुँचाने का प्रबल प्रयास किया है। आपने अपने बिंबो में भाव प्रवाह के द्वारा कहीं पर लकड़बग्घा को हँसाया है तो कहीं बिंब रूप में भाषा का नाटक दिखाने में पीछे नहीं हटे, तो कहीं पर बैल की परछाई से जीवंत वार्ता की है जो कवि की बिंब कला का एक बेजोड़ प्रयास है, जो बात शब्दों द्वारा सहज परिभाषित नहीं होती है उसको कवि ने बिंबो के द्वारा अनपढ़ और अशिक्षित श्रोताओं तक भावरूप में पहुँचाने में सफल रहे हैं। देवताले जी ने अपने काव्य में स्थूल, गति, चित्र, चाक्षुष, श्रव्य, आस्वाद्य, गंध, स्पर्श, अमूर्त, संश्लिष्ट रंग आदि विविध बिंबों का प्रयोग कर पाठकों तक पहुँचाने में सफल रहे हैं।

प्रस्तावना

जीवन में कला का विशेष महत्व होता है, जो मनुष्य के जन्म के साथ किसी न किसी संवेग रूप में जीवन के किसी पड़ाव में अपना रूप किसी न किसी माध्यम से प्रदर्शित हो ही जाता है। जीवन की विविध कलाओं का साहित्य में अपना महत्व होता है। व्यक्ति अपने हृदय के भावों को भाषा शैली के माध्यम से साहित्य रूप में प्रस्तुत करता है ,जो देवताले जी में सहज रूप से देखने को मिलता है।

देवताले जी का जन्म

एक साधारण बालक जिसका जन्म 7 नवंबर 1936 को मध्यप्रदेश के बैतूल जिला के मुलताई तहसील के छोटे से आदिवासी इलाके के जौलखेड़ा गांव के खेतीहर परिवार में हुआ, जो आगे चलकर चंद्रकांत देवताले के नाम से साहित्य जगत् में दैदिप्यमान नक्षत्र के रूप में उदित हुए। गांव और उनके परिवेश से दो दशकों से

Corresponding author
***E-mail:** banwarilal65830@gmail.com (Dr. Banwari Lal). https://orcid.org/0009-0003-0779-2127
DOI: https://doi.org/10.53724/jmsg/v11n1.03
Received 12th April 2025; Accepted 20th June2025
Available online 30th July 2025
2454-8367/©2025 The Journal. Published by Jai Maa Saraswati Gyandayini e-Journal (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

अधिक लगाव उन्हें यथार्थ बोध का पाठ सिखाया। आपके पिताजी धार्मिक प्रवृत्ति के थे, जो इंदौर में रेलवे विभाग में नौकरी करते थे और आपकी माताजी धर्मपरायण महिला थी। आप चार भाइयों में सबसे छोटे थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कम्मा देवी भी धार्मिक एवं संगीत के क्षेत्र में पीछे नहीं रही। आपने ग्रामीण परिवेश का अभाव एवं संघर्ष भरा जीवन जीया है, जिसके साक्षी आपकी रचनाएं हैं। आपने आम आदमी की जिंदगी और उनकी मुश्किलों के बारे में बहुत कुछ लिखा है, जो आपकी रचना ''हड्डियों में छिपा ज्वार'' और ''दीवार पर खून से'' तत्कालीन परिवेश का जीवंत उदाहरण है। 14 अगस्त 2017 को आपका निधन हो गया ,लेकिन आपकी रचनाएं पाठकों के लिए एक जीवंत प्रतिबिम्ब बनी हुई है।

देवताल जी के काव्य की वर्तमान परिवेश में प्रासांगिकता

किसी विचार अभिव्यक्ति या भाव को चिरस्थाई होना उसके महत्व पर निर्भर करती है। कवि देवताले जी ने अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए बिंबो का आश्रय लिया है। उनके द्वारा प्रयुक्त बिम्ब पुष्ट और परिमार्जित होने के कारण उनके विचारों को पाठक या श्रोता तक सहज रूप से संप्रेषित करने में सक्षम रहे हैं। उन्होंने अपनी रचना ''भूखंड तप रहा है'' में संकलित ''चखकर देखो शब्द'' शब्द मात्र शीर्षक से ही आस्वाद्य बिम्ब परिलक्षित होता है, जो आपकी काव्य कला का एक विशेष महत्व प्रदर्शित करता है, इसी रचना में ''फव्वारे के पास दौड़ते हुए एक तितली देखी'' में प्रकृति–चित्रण और बाल मनुहर को सहज रूप में बिंबित करने की कला आपके काव्य में समाहित है। आपकी रचनाओं में कल्पना का समावेश भी यदा–कदा समाहित होता दिखाई देता है, जैसे ''लकड़बग्घा हंस रहा है'' कविता संग्रह में संकलित ''मेरा एक सपना यह भी'' में कल्पना का मार्मिक चित्रण किया है। यथा– ''नींद में हँसते देखना उसे, मेरा एक सपना यह भी, पर वह तो, माथे की सलवटें तक, नहीं मिटा पाती सोकर भी।''[1]

विकट परिस्थितियों में एक ग्राम्य जीवन जीने वाला बालक जब विचार सम्प्रेषित शक्ति प्राप्त कर लेता है, तो घटित और लक्षित विचारों को अपने काव्य में स्थान जरूर देता है, जिसका जीवंत उदाहरण उनकी रचना ''महाबलीपुरम'' में साक्षात् बोध कराती है। जैसे –''अकेला भटकता हुआ मैं, रेत और समुन्दर के बीच, सिर्फ पत्थर के संगीत को सुनते हुए।''[2]

आदिवासी जीवन मानव के लिए अभावों और संघर्षभरा होता है, जिसका साक्षात् प्रतिबिम्ब देवताले जी ने अपनी रचना ''भूखण्ड तप रहा है'' में संकलित कविता ''जहर की गांठ कहां है'' में आदिवासी जीवन का जो बिम्ब उकेरा है, वो सहज ही संघर्ष को परिभाषित करता है। यथा– ''नंगे पैर बटोरती लड़कियाँ गोबर, सूद पर सूद नोंचते महाजन, कट कर गिरते मॉस लोथड़ों के पेड़, औरतें निपट नही पाती उनसे, खून खच्चर की अंतहीन कथाएं, फूफकारते सांप हवा में, फिर भी सुबह होती।''[3]

कवि ने प्रतिस्पर्धा के दौर में एक सामान्य जन को अपनी छंद शैली के माध्यम से शोषण और शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने विचार ''पत्थर फेंक रहा हूँ'' नामक काव्य – संग्रह में संकलित ''आपकी तरह बोलने के लिए'' नामक कविता में विचारों को निम्न प्रकार से जन सामान्य तक पहुँचा है। यथा –''दिलों में सेंध लगाने के पहले, शब्दों को छूछा करना पड़ता है, और यह महारत आत्मा को गिरवी रखने पर ही हासिल होती है, मैं मर जाऊंगा पर झूठ और दीमक की कुर्सी पर प्रतिष्ठा का यह गोरख धंधा मुझे नहीं होगा।''[4]

जन हृदय की भावनाओं को कवि अपने हृदय में उतारकर काव्य धरातल पर बिम्बित करने में कवि ने जो विचार प्रस्तुत किए हैं, वह समकालीन परिवेश का जींवत उदाहरण है। उनकी रचना ''आग हर चीज में बताई गई थी'' में संकलित ''किसने काला कोट तय किया होगा''

में अवतरित भाव निम्न प्रकार हैं। यथा– ''मुसीबत के मारे लोग भटकते दर–दर मवेशियों की जगह, ढूंढते विक्रमादित्य का सिंहासन।''[5]

देवताले जी विकट परिस्थितियों और संघर्षशील वातावरण में पले बढे हैं, उनका दौर स्वतंत्रता संग्राम से प्रभावित रहा है, उन्होंने अपने बड़े भाई को जेल जाते देखा उस दौर की राष्ट्रीय भावना और बलिदान, जो जनता के हृदय में व्याप्त था, को अपनी रचनाओं में समाहित किया है, वो आजादी का आंदोलन और संघर्ष की हुंकार उनके काव्य में समाहित है, अगर देवताले जी के काव्य का समेकित रूप से अध्ययन किया जाए तो पाएंगे कि वर्तमान समय में भारतीय जनमानस की राष्ट्र के प्रति भावना देश हित में बलिदान और विकास में भागीदारी की भावना को प्रेरित करने के विविध स्रोत आपकी रचना में समाहित है।

देवताल जी के काव्य में भावाभिव्यक्ति

कवि हृदय वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से ओत–प्रोत होता है। जनता की विविध प्रस्तुतियों में जीवन शैली आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक जीवन का जो स्वरूप तत्कालीन परिवेश में व्याप्त होता है, वह कवि हृदय में उतरकर एक साहित्य या काव्य का रूप धारण कर पाठकों के सामने प्रस्तुत होता है। देवताले जी ने अपने जीवन में जिन परिवेशियों घटनाओं को दिखा, उनको अपने बिंब भाव से प्रस्तुत किया है, उन्होंने अपनी रचना ''खुद पर निगरानी का वक्त'' में संकलित रचना ''अपने आप से'' में स्पष्ट किया है कि तत्कालीन परिवेश की घटनाओं को कविता रूप के प्रस्तुतीकरण से कहीं जनता भ्रमित न हो जाए।

यथा– ''काम है तुम्हारा कविताएं बनाना, बिदकना मत काम शब्दों से, क्योंकि यह कोई शौक, नशा, आदत, मनोरंजन या धंधा तो नहीं हिम्मत नहीं किसी और से कहने की, कह रहा मैं खुद ही से।''[6]

प्रगतिशील कवियों ने जनता की विविध परिस्थितियों को अपनी कविताओं के माध्यम से खरी और सटीक बात कही है। मुक्तिबोध और नागार्जुन के विचारों से प्रभावित होकर तत्कालीन परिस्थितियों को अपनी रचनाओं के माध्यम से उद्घाटित किया है जो उनकी रचना ''नकल के बारे'' में ''संक्षिप्त चिंतन'' में बिंबात्मक रूप से प्रस्तुत की गई है। यथा– ''बंदर ख़ासे नकलची माने जाते हमारी किंवदंतियों में, विज्ञान–पुरुष बंदरों से जोड़ते हैं, मनुष्य जाति का वंश पुराण, मंच पर और कई जगह कमोबेश कला का दर्जा पा जाता है, नकल–व्यापार।''[7]

विचार–बोध

मानव जीवन की प्रगति उसके अंतःकरण में उद्दीप्त ज्ञान से संभव है। यह ज्ञान औपदेशिक आहारिय या प्रारंब्ध से प्राप्त चेतना पुंज होता है। व्यक्ति अपने परिवेश में जो कुछ देखता है उसको उक्त ज्ञान धारा के पारस से परख कर काव्य रूप में प्रस्तुत करता है जो व्यक्ति की विचारधारा का बोध कराती है कवि देवताले जी की विचारधारा समाजोत्थान और जीवन विकास की धारा को संबल प्रदान करने वाली है। वह बाह्य आडंबर को एक छलावा मात्र समझते हैं तथा मौलिक या आंतरिक सम्बलन प्रदान करने वाली विचारधारा के पक्षधर हैं जो उनकी रचना ''खुद की निगरानी का वक्त'' में संकलित ''क्या सिर्फ अच्छा होना काफी है'' में दिखाई देती है। यथा– ''सोचता रहता, क्या सिर्फ अच्छा होना काफी है, मान लिया अच्छी झाड़ू है घर में, करती ही होगी भीतर की सफाई, पर आंगन आसपास का कूड़ा करकट तो, बढ़ता ही जा रहा दिन–ब–दिन, अच्छी झाड़ू क्या बाहर आती ही नहीं।''[8]

संदर्भ ग्रंथ सूची ––

1. चंद्रकांत देवताले: लकड़बग्घा हंस रहा है: वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 1980।
2. वही।
3. चंद्रकांत देवताले: भूखंड तप रहा है: वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 1982।

4. चंद्रकांत देवतालेः पत्थर फेंक रहा हूँः वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2010।
5. चंद्रकांत देवतालेः आज हर चीज में बताई गई थीः राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1987।
6. चंद्रकांत देवतालेः खुद पर निगरानी का वक्तः वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2015।
7. वही।
8. वही।

****